नगर खेड़े की खैर

नगर खेड़े दी खैर वे साइयां नगर खेड़े दी खैर,
मुक जान सबदे वैर वे साइयां मुक जान सबदे वैर,
नगर भी तेरा ते खेत भी तेरे,
तू पा जा फकीरा कदे पैर,
नगर खेड़े दी खैर....

आण्ड गवांड मेरे चाचे ताये, बसण वीर परजाइयाँ,
सौरे घर विच इज़्ज़त मानन सब दिया मां दिया जाइयाँ,
मेरी बीबी मां दिया जाइयाँ, इक्को घर विच मत्था टेकन की अपने की गैर,
नगर खेड़े दी खैर....

सबदे घर विच रोटी होवे, हक़ शक दा होवे चूल्हा,
जो भी आवे छकके तुरजे दर दरवाजा खुला,
हिन्दू सिख की मुल्ला, मेरा हिन्दू सिख की मुल्ला,
रल मिल छकिये ते खण्ड बन जावे कल्लयाँ बन जे जहर,
नगर खेड़े दी खैर....

सचियों पौण गुरु बन जावे, धरती बन जे मां,
धुपे बाबा कीरत करे ते, अम्बर करदे छां अम्बर करदे छां,
राती चन नाल गल्लां करिये, तत्ता मेरे नाल शह,
नगर खेड़े दी खैर....

भजन - नीरज शर्मा

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/26845/title/nagar-khede-di-khair

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |